✺ 18 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] बाप की दृष्टि पक्की है कि जो भी आत्मायें हैं सब मेरे बच्चे हैं इसलिए बच्चे-बच्चे कहते रहते हैं। तुम कभी भी किसी को बच्चे-बच्चे नहीं कर सकते हो। तुम्हें यह दृष्टि पक्की करनी है कि यह आत्मा हमारा भाई है। भाई को देखो, भाई से बात करो, इससे रूहानी प्यार रहेगा। क्रिमिनल ख्यालात खत्म हो जायेंगे। निंदा करने वाला भी मित्र बन जायेगा।

2] रूहानी बाप का क्या है ? जरूर कहेंगे शिव। वह सबका रूहानी बाप है, उनको ही भगवान् कहा जाता है।

3] यह जो आकाशवाणी कहते हैं, अब आकाशवाणी किसकी निकलती है? शिवबाबा की। इस मुख को आकाश तत्व कहा जाता है। आकाश के तत्व से वाणी तो सब मनुष्यों की निलती हैं।

4] बाप खुद बैठ समझाते हैं, मनुष्य बाप की महिमा भी करते हैं और गाली भी देते हैं। वन्डर है, बाबा की ग्लानि कब से शुरू हुई? जब से रावण राज्य शुरू हुआ है। मुख्य ग्लानि की है जो ईश्वर को सर्वव्यापी कहा है, इसी से सी गिर पड़े हैं। गायन है निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सो। अब सबसे जास्ती ग्लानि किसने की है? तुम बच्चों ने। अब फिर मित्र भी तुम बनते हो। यूँ तो ग्लानि सारी दुनिया करती है। उनमें भी नम्बरवन तुम हो फिर तुम ही मित्र बनते हो। अपकारी भी तुम बच्चे बनते हो। ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह है विचार सागर मंथन करने की बातें। विचार सागर मंथन का कितना अर्थ निकलता है। कोई समझ न सके बाप कहते हैं कि तुम बच्चे पढ़कर उपकार करते हो।

5] गायन भी है यदा-यदाहि.....भारत की बात है। खेल देखो कैसा है ! शिव जयन्ती अथवा शिव रात्रि भी मनाते हैं। वास्तव में अवतार है एक। अवतार को भी ठिक्कर-भित्तर में कह दिया है। बाप उल्हना देते हैं। गीता पाठी श्लोक पढ़ते हैं परन्तु कहते हैं हमको पता नहीं।

6] बाबा की नज़र में सब आत्मायें हैं। उनमें भी गरीब बहुत अच्छे लगते हैं क्योंकि ड्रामा अनुसार उन्होंने बहुत ग्लानि की है। अब फिर मेरे पास आ गये हैं। सिर्फ यह लक्ष्मी-नारायण हैं जिनकी कभी ग्लानि नहीं की जाती। कृष्ण की भी बहुत ग्लानि की है। वन्डर है ना। कृष्ण ही बड़ा बना तो उसकी ग्लानि नहीं है।

7] यहाँ तो इतने दु:ख आफतें आदि आती हैं, याद करते हैं हे भगवान् रहम करो, कृपा करो। अब भी बच्चे बनते हैं तो भी लिखते हैं– कृपा करो, शक्ति दो, रहम करो। बाबा लिखते हैं शक्ति आपेही योगबल से लो। अपने ऊपर कृपा रहम आपेही करो। अपने को आपेही राजतिलक दो। युक्ति बताता हूँ– कैसे दे सकते हो।

8] सबसे जास्ती क्रिमिनल अंग कौन सा है ? आंखे। विकार की आश पूरी नहीं हुई तो फिर हाथ चलाने लग पड़ते। पहले-पहले है आंखे। तब सूरदास की भी कहानी है।

9] शिवबाबा को तो ज्ञान का सागर कहा जाता है। यह तुम समझते हो कि शिवबाबा कोई पुस्तक नहीं उठाता। मैं तो नॉलेजफूल हूँठ, बीजरूप हूँ। यह सृष्टि रूपी झाड़ है, उसका रचयिता है बाप, बीज। बाबा समझाते हैं मेरा निवास स्थान मूलवतन में है।

10] सेन्सीबुल कोई अच्छा हो, उनको कोई कहे ईश्वर सर्वव्यापी है तो झट पूछेगा क्या तुम भी ईश्वर हो? क्या तुम अल्लाह-साई हो? हो नहीं सकता। परन्तु इस समय कोई सेन्सीबुल नहीं है। अल्लाह का भी पता नहीं, खुद ही कहते हैं अल्लाह हूँ। वही भी इंगलिश में कहते है ओमनी प्रेजन्ट। अर्थ समझें तो कभी नहीं कहें।

11] बच्चे अब जानते हैं शिवबाबा की जयन्ती सो नये विश्व की जयन्ती। उसमें पवित्रता-सुख-शान्ति सब कुछ आ जाता है। शिवजयन्ती सो कृष्ण जयन्ती, सो दशहरा जयन्ती। शिवजयन्ती सो दीपमाला जयन्ती, शिवजयन्ती सो स्वर्ग जयन्ती। सब जयन्तीयां आ जाती हैं। यह सब नई बातें बाप बैठ समझाते हैं।

...2

12] अच्छे -अच्छे महारथी बच्चों पर भी ग्रहचारी बैठती है तो झट गुस्सा आ जाता है फिर चिट्ठी भी नहीं लिखते हैं। बाबा भी कहते हैं कि उनकी मुरली बंद कर दो। ऐसे को बाप का खजाना देने से फायदा हीक्या। फिर कोई की आंख खुले तो कहेंगे भूल हुई। कोई तो परवाह नहीं करते। इतनी गफलत नहीं करनी चाहिए।

13] इस समय पर हर एक में 5 विकारों की गन्दगी है। फिर भगवान् को सर्वव्यापी कहना यह बहुत बड़ा झूठ है। तब तो बाप कहते हैं– यदा यदाहि.....। मैं आकर सचखण्ड, सच्चा धर्म स्थापन करता हूँ। सचखण्ड सतयुग को, झूठ खण्ड कलियुग को कहा जाता है। अभी बाप झूठ खण्ड को सचखण्ड बनाते हैं।

14] बाप का बनना अर्थात् सब बोझ बाप को दे देना। डबल लाइट का अर्थ ही है सब कुछ बाप के हवाले करना। यह तन भी मेरा नहीं। तो जब तन ही नहीं तो बाकी क्या। आप सबका वायदा ही है तन भी तेरा, मन भी तेरा, धन भी तेरा– जब सब कुछ तेरा कहा तो बोझ किस बात का इसलिए कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रख सदा न्यारे और प्यारे रहो तो डबल लाइट बन जायेंगे।

✺ योग-

1] यह ज्ञान कितना अटपटा है। ऐसी गुह्य बातें कोई समझ थोड़ेही सकते हैं, इसमें चाहिए सोने का बर्तन।

✺ धारणा-

1] मीठे बच्चे– बाप समान अपकारियों पर भी उपकार करना सीखो, निंदक को भी अपना मित्र बनाओ।

2] रूहानियत से रोब को समाप्त कर, स्वयं को शरीर की स्मृति से गलाने वाले ही सच्चे पाण्डव हैं।

✺ सेवा-

1] शिव जयन्ती सो नये विश्व की जयन्ती। चाहते हैं ना विश्व में शान्ति हो। तुम कितना भी अच्छी रीति समझाते हो, जगते ही नहीं। अज्ञान अंधेरे में सोये पड़े हैं ना। भक्ति करते सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं। बाप कहते हैं मैं आकर सबकी सद्गति करता हूँ। स्वर्ग और नर्क का राज़ तुम बच्चों को बाप समझाते हैं।

2] तुम्हारी भी सद्गति हम जरूर करेंगे, जितनी चाहिए उतनी गाली दो। ईश्वर की ग्लानि करते हैं, हमारी की तो क्या हुआ। तुम्हारी सद्गति हम जरूर करेंगे। नहीं चाहेंगे तो भी नाक से पकड़कर ले जायेंगे। डरने की तो बात नहीं, जो कुछ करते हैं कल्प पहले भी किया है। **हम बी.के. तो सबकी सद्गति करेंगे। अच्छी तरह से समझाना चाहिए।**